सारांश

सेहत का बहीखाता परियोजना द्वारा पर्यावरण व स्वास्थय समस्याओ के स्थानीय समाधान

डा.नीता कुमार, डा. निधि, डा.के.के.गांगुली, डा.एस.के.रसानिया, पायल कुमारी

भारतीय आर्युविज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बाक्स नं 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली–110 029

भारत विविधता से भरा देश है, भोगोलिक परिस्थिति, भाषा, संस्कृति प्रति 50 कि.मी. पर बदलती प्रतीत होती है। अतः बहुत सारी पर्यावरणीय व स्वास्थय समस्याओ के लिए उसी स्थान सम्बधित जानकारी एकत्र होनी चाहिए। स्थानीय लोगो को ही प्रशिक्षित कर स्थानीय समाधान ही व्यवहारिक व ठोस उपाय होगा। यदि इस प्रकार की व्यवस्था का इस्तेमाल करके सामयिक व प्रामाणिक जानकारी एकत्र होती है सही समय पर सही जानकारी तथा बिना देरी किए गए निदान भी जमीनी स्तर तक पहुँचाता है तभी स्वास्थ्य जानकारी तंत्र (HIMS) काम का तंत्र बन सकता है।

इसी उद्देश्य को लेकर शुरु हुई ICMR की सेहत बहीखाता परियोजना ने भारत की तीन भौगोलिक व सामाजिक परिस्थितियों में इस तंत्र की स्वीकार्यता का परीक्षण किया है । अठ्ठाहनवे (98 %) प्रतिशत लोगो द्वारा इसकी स्वीकार्यता दर्ज हुई तथा योजना स्थानीय स्तर पर सराही गयी। यह योजना गांव (उत्तरप्रदेश), स्लम (दिल्ली), व जनजातियों(अरुणाचल प्रदेश) की साइटो पर अपने प्रारभिक चरण पूरे कर चुकी।

अरुणाचल प्रदेश की दुरुह परिस्थितियों में तो स्थानीय समस्याओं पर योजना के चलते इतना प्रभाव पड़ा कि यहाँ बीमारियों पर होने वाला खर्च परियोजना के पहले औसत 40.000/- रु प्रति माह दर्ज किया गया था वह परियोजना के चलते औसत 1400 रु प्रति माह आ गया। परिवार कम खर्च में बेहतर स्वास्थय प्राप्त करने लगे।

जनजातिय समस्याएं जैसे पानी जनित रोग (हिपेटाइटिस, टाइफाइड) नशा, पलायन जैसी समस्याओं पर व्यवस्था का ध्यान गया क्योंकि यह जानकारी सीधे उपभोक्ता से आती है, प्रतिमाह आती है, अतः इसकी प्रामाणिकता, सामयिकता से अपेक्षित प्रभाव पड़ा। स्थानीय विद्यार्थी व घरेलू महिलाएं, स्वास्थय सेवक की तरह प्रशिक्षित किए गए ताकि सेहत की जानकारी व समस्या का समाधान बिना देरी के जरूरतमंद तक पहुँचे।

दिल्ली प्रांत की स्लम क्षेत्र की जनता में बुनियादी स्वास्थय सेवा प्रचुरता से उपलब्ध मिली इसके बावजूद बच्चो में कम वजन, माताओ का घर में ही बच्चे की डिलीवरी, बूढ़ों के ईलाज में देरी व पूर्ण ईलाज न मिलना सरकारी सुविधाओ का पूर्ण उपयोग न होना जैसी परिस्थितियों तथा कालोनी के पास ही स्थित लैंडफिल साइट के दुष्प्रभाव पर विचार हो पाया । स्थानीय स्वास्थय सेवकों को प्रशिक्षित कर सामाधान के लिये विमर्श जारी है।

''जानकारी ही बचाव है'' का सही तरीके से उपयोग करती सेहत बहीखाता परियोजना का अन्य क्षेत्रों में विस्तार अवश्यंभावी है, जिससे सभी क्षेत्रों में स्थानीय स्तर के समाधान उपलब्ध हों।

संदर्भ :
http://healthaccountsscheme.nic.in/account/login